खर्चा कहाँ से चलता है? और बाबा ने समझाय दिया है कि हम जो ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं, प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हैं। तो बाप और बच्चे, तो बच्चे ही खर्चा करेंगे। तन,मन,धन से भारत की सेवा करनी है। तो वो जवाब देना बहुतों को ऐसा आता नहीं है, जो वो समझें कि ये भारत की तन,मन,धन से रूहानी सेवा कर रहे हैं; क्योंकि पढ़ी–लिखी नहीं हैं ना बच्ची, इतना विशाल बुद्धि नहीं हैं बच्चियाँ। सिंध की हैं ना फिर भी। तो सिंध को मगध देश कहा गया हुआ है। मतलब हुआ आसुरी गुण और आसुरी बोलना। अभी है ईश्वरीय बोलना। सीखना है बहुत ही। नहीं तो कोई भी किस प्रकार का भी 'ना' का अक्षर निकल न सके कोई से। 'ना' का अक्षर निकला, नास्तिक बने अर्थात् नाफरमानबरदार नास्तिक बने यानी भगवान की (...)फरमानबरदारी हुई ना। ये बड़े गेस्ट को बुलाया ना। ये कम थोड़े ही है, बड़ा गेस्ट है ना बच्ची। सभी पतितों ने रड़ियाँ मार–2 करके ये ड्रामा के प्लैन अनुसार, ड्रामा तो है ही, चिल्लाए–2, हाय भगवान, हे फलाना–2 करके उनको बुलाया है जैसे कि। अभी बुलाया है तो जो फिर उनके साथ मिलते हैं, उनको भी जभी अक्कल आवे ना, ऐसे–2 बात करने का खिर; क्योंकि फिर भी ये अनपढ़ी हैं ना। ये तो पढ़ा, बहुत जानते हैं ना, किसको किस पोज़ीशन से बुलाना चाहिए...। ये तो बहुतों से मिला हुआ है ना। तो पोज़ीशन से मिला ना। ये बिचारे फिमेल, पोज़ीशन को जानते नहीं हैं– कैसे बात करनी है, किससे क्या करनी चाहिए। ...न इतनी खुशी रहती है, न इतना उमंग, न इतनी रॉयल्टी आती है। अब बहुत तो हैं जो बिल्कुल ही नहीं जानते हैं कि कोई शिवबाबा डायरैक्शन देते हैं और शिवबाबा सदैव कहते रहे– बच्चे, शिवबाबा को समझो कि वो डायरैक्शन देते हैं। (...) आना होते हैं, समझते तो (हैं) ना अपन को कि हम क्या हैं, क्या बन रहे हैं, बाप से कैसा वर्सा मिलता है और उनमें कितने गुण हैं। गुण गाए तो जाते हैं ना–सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण। सर्वगुण सम्पन्न, अभी सभी गुण चाहिए ना। मनुष्य तो नहीं कहेंगे ना, देवता भी नहीं कहेंगे। रूहानी बाबा, जिसको हम शिव कहते हैं, वो शिवबाबा ही फिर शिक्षक, वो शिवबाबा ही फिर सद्गुरू। अच्छा, ये बातें ऐसी इतनी सहज भूल क्यों जाना चाहिए! भला ये सहज बातें जो अभी बाबा ने सुनाईं, ये तो नोट कर देना ना। तो भला ये तो घड़ी–2 याद करें, भूलें ना। तो अभी इसमें टेप तो होते हैं। कल निकाल करके फिर से लिखते भी हो। फिर से ये लिख करके इन बच्चियों को यहाँ ताबीज़ लगाय दो। ताबीज़ लगाते हैं ना यहाँ। तो भूलें तो नहीं ना। रोज़ याद तो करें बाप को, तो कितना फायदा हो जाएगा! कि ताबीज़ क्यों लगाते हैं? यादगार के लिए। ये तो ठीक है ना। तो बाबा कहते हैं– ये ताबीज़ लगाय देवें यहाँ लिखत में कि बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है, गुरू भी है और उनसे हम अभी वर्सा ले रहे हैं और बाबा कहते हैं कि हमको याद करते रहो। यहाँ लगाते हैं ना यादगार के लिए ताबीज। कोई मंत्र–वंत्र देते हैं, तो वो भी डाल करके सोने में या चाँदी में, वो बना करके एक डब्बियाँ यहाँ बाँध देते हैं। ऐसे होते हैं ना। तो ऐसी–2 बातें जो घड़ी–2 भूल जाते हैं, उनको बाँध देना चाहिए या पट्टी पर लिख करके यहाँ रख दें, जैसे घड़ी देखते हैं तैसे रोज़ वो देखें। तो यादगिरी पक्की हो जावे। और बाबा कितना फ़राकदिल! बाबा कहे ये बेचारी बुड्ढियाँ हैं और बुड्ढा है। क्या वहाँ

करता होगा? क्यों न ये बेचारा बैठ जावें तो पक्की हो जावे अच्छी तरह से। यहाँ काम भी करते रहेंगे, आराम से बैठाओगे। देखो, नहीं तो ऐसे कौन बैठा हो, जो कहे– हमारे घर में बैठ जाओ। ये तो महल है ना, कोई झुपड़ी तो नहीं है। तुम्हारे घर से तो अच्छा है ना महल। (किसी भाई ने कुछ कहा) अब बाबा बैठे हैं। कितना देखते हैं कि ये बच्चे निर्बन्धन हैं, इनको तो कोई बंधन नहीं है। ये बिचारी यहाँ बैठ करके बाप को याद करेंगी या बैठी होंगी, भले ही अपना जीवन बनाय लेवे। भले इसको कोई पैसा न भी भेजे खाने के लिए, हर्जा नहीं है। मैं इन दोनों को एक (...), दूसरा इनका कौन है? (किसी ने कहा–यही है) यही है, हाँ! कुछ भी तुमको वो न भेजे जिसके हाथ में तुम्हारी खेती है। चलो तुमको हम खिलाएँगे यहाँ। ऐसा नहीं किसको मैं ऑफर करता हूँ। देखता हूँ ये बच्चे बड़े अच्छे हैं, बंधन मुक्त हैं। मैं जानता हूँ, इनको भी क्या याद पड़ेगा! मैं दूसरों को नहीं रख सकता हूँ; क्योंकि उनको बंधन होगा ना, याद होगा तो हमारा वायुमण्डल खराब कर देंगे। हम इसके लिए रखते हैं इनको क्या बंधन है! सो बंधन मुक्त होगा, तो उनको याद नहीं करेगा, वायुमण्डल खराब नहीं करेगा। समझा ना! इसलिए बाबा उनके ऊपर आशिक होते हैं। जो समझते हैं निर्बंधन यहाँ बैठेंगे। अभी तो इनको एक बाबा के सिवाय तो दूसरा कोई है नहीं। तो यहाँ बैठेंगे, याद करेंगे, मदद करेंगे, हमारे वायुमण्डल को खराब नहीं करेंगे। समझा? इसको कहा जाता है रहमदिल देखो, बेपरवाह बादशाह। अच्छा, चलो... अभी इनको देख करके खुश बहुत होते हैं। और ही पटना का नाम बाला हो जाएगा, दुआबा बस रह जाएगा। वो लोग (...) बाबा! बाबा तो पटना के बच्चों के ऊपर आशिक हो गया। दो को एकदम अपने पास ही रख दिया। अभी एक तो और मँगा रहा हूँ उनका चचेरा लड़का है, कौन है? (किसी ने कहा–भाई) हाँ कि अगर ऐसे निकल पड़ा तो बाबा बोलेगा–वाह! पटना ने तो हमको बहुत कुछ दिया। बाकी अभी वो मेहनत करेंगे, अपनी कमाई करेंगे, वो तो इनके ऊपर है। जितना पुरुषार्थ करेंगे, बाप को याद करेंगे, सर्विस में लग जाएँगे, वो अपना ऊँचा पद पाएँगे। बाबा तो फिर यादगार रख देते हैं ना पटना की। कोई भी आएगा तो बोलेगा– देखो, पटना के (...)। देखो कितना बाबा उठा रहे हैं पटना वालों को। सिर्फ बुड्ढियों को। जब बुड्ढियाँ देखता हूँ, बाबा खुश होते हैं। भई आगे भी आई थीं ना बुड्ढियाँ कहाँ से? (किसी ने कहा– ...गुडगांव) गुडगाँव से, मेरठ से, सिकन्दराबाद से, कहाँ–2 से बुड्ढियाँ आती हैं तो बाबा खुश होते हैं। क्यों? हमारी हमजिन्स हैं ना–बुड्ढे और बुड्ढियाँ। अच्छा! चलो बच्ची। (म्युज़िक बजा) बाबा तो इनकी वो जो पार्वती है, उनको कहे–तुमको भी कोई बंधन नहीं है, तुम कहाँ जाते हो? तुम भी यहाँ बैठ जाओ। बैठे नहीं। अब इनको तो बिठाए नहीं सकते हैं; क्योंकि बंधन है बड़ा। .... तो उनको यहाँ बहुत सुखी रखें। भई आराम से कभी नीचे जावे, कभी ऊपर आवे। बाबा की कोई(पूरी) छूट है। खावे–पीवे। बाकी लज्जारी थी। वो कुछ बातचीत नहीं करती थी किससे। तो यहाँ उनको हिराय देते बातचीत करते।

अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बापदादा, तो रूहानी दादा नहीं, केअर हो गया दादा। रूहानी बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट।